Tital Code. : RAJHIN27802

वागड़ संदेश

सुविचार

हम में से सब लोग महान काम नहीं कर सकते लेकिन महान प्यार के साथ हम कई छोटी-छोटी चीजें कर सकते हैं।

वर्ष-1, अंक-1 | सागवाड़ा, शुक्रवार 20 अगस्त 2021 | अवधि : हिन्दी वार्षिक | पृष्ठ-4, मूल्य -10 रु. (वार्षिक)

डूंगरपुर में बारिश की बेरुखी

डूंगरपुर में बारिश की बेरुखी, पिछले दो सालों से इस बार कम हुई बारिश

डूंगरपुर।

प्रदेश में मानसून कई जिलो में मेहरबान हुआ है। लेकिन डूंगरपुर जिले में अब तक मानसून मेहरबान नहीं हुआ है। ऐसे में जिले में अब तक 237 एमएम बारिश ही हुई है जो पिछले दो सालों में सबसे कम है। वहीं बारिश की बेरुखी से जिले के बांध और तालाब खाली पड़े हैं। 22 तालाबों में से 21 में 9 से लेकर 45 फीसदी तक पानी ही बचा है। ऐसे में बारिश की बेरुखी ऐसी ही रही तो आने वाले समय में पानी की भयंकर समस्या हो सकती है। राजस्थान के दक्षिणांचल में स्थित डूंगरपुर-बांसवाड़ा में मानसून 15 जून के बाद आ जाता है, लेकिन इस बार मानसून ने केवल रिमझिम से ही काम चलाया। तेज बारिश नहीं होने से जिले में सामान्य बारिश से भी कम बारिश हुई है जो पिछले दो सालों से काफी कम है। वहीं बारिश के बिना अब जलाशय भी सूखने के कगार पर है। जिले में बारिश के आंकड़ों पर नजर दौड़ाएं तो इस मानसून में अब तक 237 एमएम बारिश रिकॉर्ड की गई है, जो 2020 से 283 एमएम और 2019 से 246 एमएम से कम हुई है। बारिश के यह आंकड़े ही जिले में मानसून की स्थिति को साफ दिखा रहे है।

बारिश नहीं होने के असर जिले के बांध व तालाबो पर पड़ रहा है। जिले में 22 छोटे-बड़े बांध व तालाब है, जिसमें से सोमकमला आंबा बांध को छोड़ दे तो सभी तालाबों में 9 से 50 फीसदी तक ही पानी बचा है। वहीं कई बांध ऐसे है जो मानसून की पहली बारिश में ही भर जाते थे। इस बार वे भी खाली पड़े है और लोग मानसून का इंतजार कर रहे है।

सोमकमला आम्बा बाँध

इधर जिले में बारिश नहीं होने से जहा सिंचाई विभाग व जलदाय विभाग तो चिंतित है ही वही किसान व आमजन भी परेशान है। वर्तमान में बांधो व तालाबो की स्थिति को देखते हुए अगर इन्द्रदेव यू ही रूठे रहे तो आने वाले समय में लोगो के साथ मवेशियों के लिए पेयजल संकट और सिंचाई के पानी की बड़ी समस्या खड़ी हो सकती है।

10 अगस्त तक किस साल कितनी हुई बारिश

1. वर्ष 2021 - 237 एमएम
2. वर्ष 2020 - 283.88 एमएम
3. वर्ष 2019 - 483 एमएम

जिले के बांधो व तालाबों में उपलब्ध पानी की स्थिति

बांध/ तालाब	भराव क्षमता	उपलब्ध पानी
1. सोमकमला आंबा बांध	13 मीटर	10.35 मीटर
2. लोडेश्वर	8.93 मीटर	2.85 मीटर
3. वात्रक	4.72 मीटर	2.30 मीटर
4. भादर	5.35 मीटर	1 मीटर
5. आंकरसोल का नाका	9 मीटर	2.80 मीटर
6. मारगिया	8.85 मीटर	5.40 मीटर
7. मेवाड़ा	7.80 मीटर	1 मीटर
8. अमरपुरा	6.40 मीटर	3.90 मीटर
9. बाबा की बार	5.50 मीटर	2.10 मीटर
10. सूरी तालाब	5.49 मीटर	0.60 मीटर
11. गड़ा झुमजी	3.50 मीटर	0.80 मीटर
12. टामटिया	3.20 मीटर	0.70 मीटर
13. पूंजपुर	3.82 मीटर	2.65 मीटर
14. बोडीगामा	4.35 मीटर	0.80 मीटर
15. कांठड़ी	8.50 मीटर	0.20 मीटर
16. गलियाना	4.60 मीटर	0.10 मीटर
17. गजपुर	9.75 मीटर	0.50 मीटर
18. भैरू का नाका	10.07 मीटर	5 मीटर
19. घोड़ियों का नाका	8.50 मीटर	3.10 मीटर
20. करावाड़ा	2.44 मीटर	0.44 मीटर
21. वरदोल का नाका	6 मीटर	0.70 मीटर
22. वारंदा	4.40 मीटर	2 मीटर

बीजेपी के पोस्टर में आई वसुंधरा, इधर ज्ञानदेव का ज्ञान-केंद्र में मंत्री बने वसुंधरा

बीजेपी में पोस्टर वॉर खत्म

वसुंधरा राजे ने पोस्टर वॉर पर कहा था कि पोस्टर्स से फर्क नहीं पड़ता, जनता के दिलों पर राज करना है

बीजेपी के पोस्टर में आई वसुंधरा, इधर ज्ञानदेव का ज्ञान-केंद्र में मंत्री बने वसुंधरा

भूपेंद्र यादव की जनआशीर्वाद यात्रा के पोस्टर्स में लगा पूर्व वसुंधरा राजे का फोटो

जयपुर।

राजस्थान में आज से केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव की जन आशीर्वाद यात्रा शुरू गई है। जन आशीर्वाद यात्रा के जरिए बीजेपी ने बैनर पोस्टर में धड़ेबंदी और खींचतान कम करने की कवायद की है। यात्रा की सभाओं से लेकर स्वागत कार्यक्रमों के मंचों और बैनर पोस्टरों में पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के फोटो लगाए गए हैं। बीजेपी राजस्थान के आधिकारिक सोशल मीडिया अकाउंट से भी जन आशीर्वाद यात्रा के जारी किए डिजिटल पोस्टर में वसुंधरा राजे के फोटो शामिल किए गए हैं। भिवाड़ी से भूपेंद्र यादव की जन आशीर्वाद यात्रा शुरू हुई है, आज से तीन दिन तक यह यात्रा 400 किलोमीटर का सफर तय करेगी। भिवाड़ी से यात्रा की शुरूआत से पहले की गई सभा में मंच पर लगे बड़े बैनर में वुसंधरा राजे का फोटो था। बीजेपी प्रदेश मुख्यालय के मुख्य होर्डिंग से राजे का फोटो हटने के बाद इस पर भारी विवाद हुआ था। राजे समर्थक नेताओं ने इस पर कड़ी प्रतिक्रिया जताई थी। इधर भाजपा के पूर्व विधायक ज्ञानदेव आहूजा बुधवार को बारां में जनसंख्या समाधान फाउंडेशन के कार्यक्रम में पहुंचे। यहां आहूजा पत्रकारों से बात की। उन्होंने वसुंधरा राजे के गढ़ में आकर वसुंधरा राजे को केंद्र में मंत्री बनने नसीहत दे डाली। उन्होंने कहा कि वसुंधरा राजे दो बार सीएम रह चुकी हैं। राजस्थान में किसी नए व्यक्ति को मौका दिया जाए। वो खुद केंद्र में मंत्री बने।

पूर्व विधायक कटारा का बीटीपी में विरोध पंचायत समिति सदस्य डामोर ने दिया इस्तीफा

सीमलवाड़ा।

भाजपा से निष्काषित डूंगरपुर विधानसभा क्षेत्र के पूर्व विधायक देवेन्द्र कटारा के बीटीपी में शामिल होने व उनके द्वारा दिए एक बयान पर बीटीपी में गतिरोध बढ़ गया है। इसी गतिरोध के चलते बीटीपी के एक ब्लोक अध्यक्ष व पंचायतीराज के 5 जनप्रतिनिधियों ने सोश्यल मीडिया पर अपने बयान जारी करते हुए बीटीपी से अपना नाता तोड़ लिया है।

मामले के अनुसार बीटीपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने डूंगरपुर विधानसभा क्षेत्र से पूर्व विधायक व भाजपा से निष्काषित देवेन्द्र कटारा को डूंगरपुर के स्थानीय बीटीपी नेताओं की बिना रायशुमारी के पार्टी में शामिल करते हुए बीटीपी का प्रदेश प्रवक्ता बनाया था। जिसके बाद से डूंगरपुर स्थानीय बीटीपी के नेताओ में नाराजगी थी। वही इसके बाद हाल ही में बीटीपी में

शामिल हुए पूर्व विधायक देवेन्द्र कटारा ने अपने एक बयान में कहा की भारतीय ट्राइबल पार्टी सामाजिक जन जागरण का आधार रहे आदिवासी परिवार का हिस्सा नहीं है। जिससे भी बीटीपी के नेताओं में नराजगी थी। इसी नाराजगी के चलते जिला परिषद सदस्य माया कलासुआ,पार्वती डोडा, सागवाडा पंचायत समिति सदस्य योगेश खांट, गलियाकोट पंचायत समिति सदस्य संजय डामोर, सीमलवाडा पंचायत समिति सदस्य मुकेश डामोर और बिछीवाडा ब्लोक के अध्यक्ष धुलेश्वर वरहात ने सोश्यल मीडिया पर अपने-अपने अलग-अलग वीडियो जारी करते हुए बीटीपी से अपना नाता तोड़ लिया है। जारी वीडियो में पूर्व विधायक देवेन्द्र कटारा को गलत तरीके से पार्टी में शामिल करने व उनके दिए गए बयान का हवाला देते हुए सभी ने कहा की वे बता देना चाहते है की वे आदिवासी परिवार की देन है ना की भारतीय ट्राइबल पार्टी की। उन्होंने कहा की वे राजनैतिक उद्देश्य से इकट्ठा नहीं हुए है बल्कि सामजिक अस्मिता कायम रखने के लिए जनजागरण कर रहे है। उन्होंने कहा की हम भारतीय ट्राइबल पार्टी को निश्चित शर्तो पर मतलब लीज पर लाये थे। लेकिन वर्तमान में भारतीय ट्राइबल पार्टी आदिवासी समाज पर अपना नियंत्रण जमाना चाहती है जो उन्हें स्वीकार नहीं है। जिसके चलते वे भारतीय ट्राइबल पार्टी से अपना सम्बन्ध तोड़ रहे है।

श्रावण मास में स्वयम्भू भूवनेश्वर महादेव की ब्रह्म मुहूर्त में पूजा अर्चना

एक भक्त ऐसा भी जो 13 किमी चलकर करता है भोलेनाथ के दर्शन

डूंगरपुर।

करोली के नजदीक आदिकाल के भुवनेश्वर शिवालय पर ब्रम्ह मुहूर्त में शिव भक्तों द्वारा डूंगरपुर नगर से सुबह 4 बजे 13 किलोमीटर जाकर रोजाना स्वयम्भू भगवान भोलेनाथ की सोढशोपचार विधि से नाना प्रकार की पूजन सामग्री एवम सुंगंधित द्रव्यों से पूजा की जाती है। पूजन के बाद दूध, गंगाजल, भांग, अनार रस, गन्ने के रस से भगवान भोलेनाथ का रुद्राभिषेक किया जाता है।

पूजन के बाद प्रतिदिन भगवान शिव का अलग अलग मनमोहक श्रृंगार किया जाता है।श्रावण मास की एकम से ये पूजा प्रारम्भ की जाती है जो पूरे महीने अनवरत चलती है। जितेंद्र जोशी के आचार्यवत में जिग्नेश श्रीमाल, मयंक श्रीमाल, नितिन चेतन लाल श्रीमाल, राहुल श्रीमाल,इंदरलाल पंवार, जगदीश पटेल, पंकज कलाल द्वारा प्रतिदिन स्वयम्भू भुवनेश महादेवजी की मासीक पूजा की जाती है जो कई वर्षों से की जाती रही है।

साइबर अटैक

6 माह में सौ से अधिक मामलों में कार्यवाही

30 लाख की राशि रिफंड करवाई

डूंगरपुर पुलिस की साइबर टीम ऑनलाइन फ्रोड राशि को वापस दिलाने में अहम भूमिका निभा रही है

सपना शर्मा, डूँगरपुर।

डिजिटल जमाने में साइबर अटैक पुलिस के लिए बड़ी चुनौती बन चुका है। हाइटेक तरीके से ठगी का ट्रेंड बदल गया है। प्रदेश के आदिवासी बहुल डूंगरपुर जिले में भी साइबर क्राइम का ग्राफ बढ़ता जा रहा है हालाकि डूंगरपुर पुलिस की साइबर टीम ऑनलाइन फ्रोड राशि को वापस दिलाने में अहम भूमिका निभा रही है। डूंगरपुर जिले की साइबर सेल में कांस्टेबल अभिषेक मीणा, राहुल त्रिवेदी, हेमेन्द्र सिंह, जोगेंद्र सिंह लम्बे समय से सेवाए दे रहे है। अब तक 30 से 35 ट्रेनिंग अटेंड कर साइबर अपराध से निपटने के काफी हद तक सक्षम हो गए है।डूंगरपुर पुलिस की साइबर सेल ने पिछले 6 माह में उनके पास आये सौ से अधिक मामलों में त्वरित कार्रवाई करते हुए बैंक अधिकारियो के माध्यम से ठगों के खातो को ब्लाक करवाया और करीब 30 लाख की राशि रिफंड करवाई है। जिससे आमजन में पुलिस के प्रति विश्वास बढ़ा है। वही लाखो की राशी अभी बैंक के जरिये होल्ड पर रखी है जो भी जल्द परिवादी को रिफंड होगी।इधर एसपी डूंगरपुर सुधीर जोशी ने बताया की अधिकतर लोग वीडियो काल के जरिये ब्लेकमेल कर ठगी करने, मोबाइल पर लिंक भेज कर राशी उडाना, सोश्यल मीडिया का अकाउंट हेक कर राशि उठाने आदि मामले आ रहे है। जिनके खिलाफ डूंगरपुर साइबर सेल त्वरित कार्रवाई कर रही है।

उन्होंने बताया की ऑनलाइन अपराध होने के कुछ समय बाद ही अगर शिकायत आ जाती है तो राशी को वापस लाने की गारंटी 95 फीसदी से अधिक की हो जाती है। ऐसे में अगर किसी के साथ ऑनलाइन अपराध होता है उसकी सुचना तुरंत साइबर सेल को या हेल्प लाइन नम्बर 155260 पर दे सकते है।

त्योहार को घर पर ही मनाए, कोरोना से मुक्ति पाए - डॉ. शर्मा

डूंगरपुर। त्योहारों पर सावधानी ही कोरोना संक्रमण से बचा सकती है। सावधानी रखते हुए आमजन घर पर ही रह कर त्योहार मनाए, भीड-भाड के क्षेत्र में ना जाए, त्योहार पर आपके अपने जो की डूंगरपुर से बाहर कार्य, व व्यापार करते है और वह भी त्योहार पर लौट कर आते है। ऐसे मे उन से कुछ समय के लिए दूरी रखे, आरएटी जांच पश्चात ही मेल मिलाप करे।

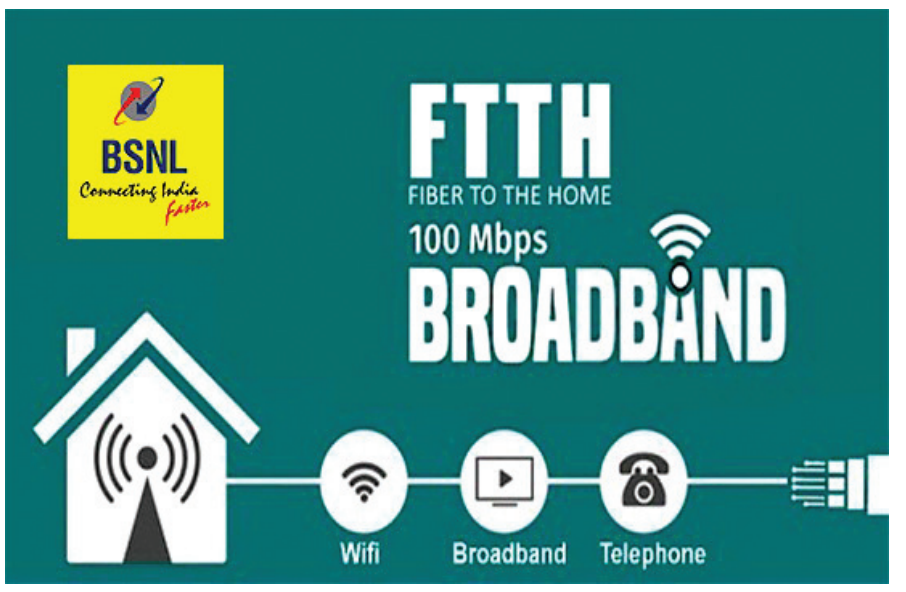

सम्पादकीय

महंगाई का दंश

व्यावसायिक इस्तेमाल वाला सिलेंडर भी महंगा कर दिया है। पेट्रोल और डीजल के दाम पहले ही सारे रिकार्ड तोड़ चुके हैं। दरअसल ईंधन की महंगाई जीवन जीने की लागत को जिस तेजी से बढ़ाती जाती है, उसका असर सामने आने में देर नहीं लगती। ऐसे में बड़ा सवाल यह है कि आम आदमी का गुजारा चलेगा कैसे? गौरतलब है कि रसोई गैस सिलेंडरों का इस्तेमाल करने वालों की तादाद करोड़ों में है। जिन शहरों में पाइप के जरिए रसोई गैस आपूर्ति की सुविधा है, वहां भी लाखों लोग गैस सिलेंडरों पर ही निर्भर हैं। कस्बों और गांवों में भी रसोई गैस सिलेंडर इस्तेमाल होते ही हैं। जाहिर है आबादी का बड़ा हिस्सा सिलेंडर वाले ईंधन पर ही निर्भर है। यह तबका मध्यम और निम्न वर्ग का है।

रसोई गैस सिलेंडर महंगा कर सरकार ने आम आदमी पर बोझ और बढ़ा दिया है। लोग महंगाई से पहले ही बेहाल हैं। आमजन के लिए जब दो वक्त की रोटी जुटा पाना भी मुश्किल हो रहा हो, उस सूरत में भी रसोई गैस हर महीने महंगी होती जाएगी तो भूखों मरने की नौबत आने में देर नहीं लगने वाली। इस साल यह आठवां मौका है जब रसोई गैस सिलेंडर के दाम बढ़ाए गए हैं। हर महीने रसोई गैस महंगी हो रही है। फरवरी में तो दो बार दाम बढ़े थे, एक बार पंद्रह फरवरी को और फिर पच्चीस फरवरी को। अब बिना सबसिडी वाले 14.2 किलोग्राम के सिलेंडर पर पच्चीस रुपए और बढ़ा दिए गए हैं। ऐसे में जब भी सिलेंडर महंगा होता है तो सबसे ज्यादा मार भी इसी तबके पर पड़ती है। पिछले कुछ समय में तो खाने-पीने की चीजों से लेकर रोजमर्रा के इस्तेमाल वाले सामान जिस तेजी से महंगे हुए हैं, वह चिंताजनक है। खाने के तेल हों, या दालें, फल, सब्जियां, या फिर दूध, सबके दाम आसमान छू गए। उपभोक्ता कंपनियां कच्चा माल महंगा होने से लेकर उत्पादन लागत बढ़ने और ढुलाई बढ़ने जैसे तर्क देकर अपना बचाव कर रही हैं। पिछले एक साल में ही कई जरूरी चीजों के दाम डेढ़ से दो गुने तक बढ़ा दिए गए। यह नहीं भूलना चाहिए कि पिछले सवा साल में करोड़ों लोगों को आजीविका से हाथ धोना पड़ा है। इनमें नियमित रूप से वेतन पाने वालों से लेकर दिहाड़ी मजदूर तक हैं। इस साल जुलाई में ही चौंतीस लाख वैतनिक लोगों का रोजगार जाने की खबर कम हैरान करने वाली नहीं है। ऐसे में अगर आम आदमी की जरूरतों से सीधा सरोकार रखने वाले पेट्रोल, डीजल और रसोई गैस जैसे ईंधन महंगे किए जाते रहेंगे तो सरकार का इससे ज्यादा जनविरोधी रुख और क्या होगा। सरकार इस बात को बखूबी समझती है कि ईंधन, दूध और खाने-पीने का सामान कितना भी महंगा क्यों न कर दिया जाए, लोगों की मजबूरी है इन्हें खरीदना।

इसलिए इस रास्ते ही लोगों की जेब से पैसा निकाला जाए। हाल में वित्त मंत्री ने साफ कह दिया है कि पेट्रोल और डीजल पर शुल्क में कोई कटौती नहीं होगी। जाहिर है पेट्रोल-डीजल के दाम कम नहीं होने वाले, महंगाई और बढ़ेगी। महंगाई को लेकर रिजर्व बैंक पहले ही अपनी आशंकाएं जता चुका है। क्या यह हैरानी की बात नहीं कि जो भाजपा 2014 से पहले महंगाई और ईंधन के दाम बढ़ने पर सरकार को कोसती और विरोध-प्रदर्शन व आंदोलन करती दिखती थी, आज उसी ने अपनी सरकार के राज में महंगाई पर चुप्पी साध ली है! बढ़ती महंगाई सरकार की नीतिगत खामियों और आमजन के प्रति सरकार की संवेदनहीनता को बताने के लिए काफी है।

जरूरी है विभाजन की त्रासदी का स्मरण : इतिहास को न तो भुलाया जा सकता है और न ही छिपाया, जब भी ऐसा हुआ, परिणाम निकले बुरे

विभाजन के समय करीब 20 लाख लोगों की मौत को भूल जाओ। सदी के सबसे बड़े विस्थापन पर ध्यान मत दो। अपनी बेटियों, बहनों को जिन लोगों ने खुद ही मार दिया, ताकि उनकी आबरू बचा सकें, उन्हें भूल जाएं। हिंदू मानस के मन पर यह घाव पहला नहीं था। आठ सौ साल का दर्द है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता रहा है। विभाजन की विभीषिका ने उस घाव को हरा किया। इस विभीषिका को भुलाने के लिए 'गंगा-जमुनी तहजीब' के रूप में सदी का सबसे बड़ा पाखंड रचा गया। क्या होती है यह गंगा-जमुनी तहजीब? यदि सचमुच ऐसी कोई तहजीब होती तो भारत का विभाजन क्यों होता? पूरे इतिहास पर नजर डालिए और बताइए कि कब इस गंगा-जमुनी तहजीब का चलन था? इस अवधारणा की रचना करने वालों को पता नहीं है कि जब प्रयागराज में संगम पर गंगा-जमुना मिलती हैं तो जमुना का अस्तित्व गंगा में विलीन हो जाता है।

कहते हैं कि जो इतिहास को भूल जाते हैं, वे उसे दोहराने के लिए अभिशप्त होते हैं। आजादी के बाद से हमें यही बताया जा रहा है कि विभाजन के समय की विभीषिका को भूल जाओ। कहा ही नहीं जा रहा है, इतिहास भी इसी सोच के मुताबिक लिखा और लिखवाया गया। नतीजा आपके सामने है। आज यह कहने का साहस आ गया है कि दो राष्ट्र सिद्धांत का प्रतिपादन वीर सावरकर ने किया था। मतलब समझ रहे हैं आप! साफ है कि जिन्ना को भारत विभाजन के दोष से मुक्त करना है। सच को छिपाकर किया गया झूठ का प्रचार अतीत के घाव से भी ज्यादा पीड़ा देता है। सिर्फ जिन्ना को बरी करने की ही कोशिश नहीं हो रही है। अब तो सड़कों पर नारे लग रहे हैं कि जिन्ना वाली आजादी चाहिए। नागरिकता संशोधन कानून के खिलाफ आंदोलन करने वालों ने ये नारे लगाए और उसका समर्थन देश के अग्रणी विपक्षी दलों ने किया। 'भारत तेरे टुकड़े होंगे, इंशा अल्लाह-इंशा अल्लाह' के नारे पर भी इन्हें कोई एतराज नहीं है।

आजादी के आंदोलन का प्रेरणास्रोत रहा वंदे मातरम गीत 75 साल में सांप्रदायिक हो गया और जिन्ना धर्मनिरपेक्ष। कथित धर्मनिरपेक्षता की राजनीति देश को यहां तक लेकर आ गई है। कहते हैं 16 अगस्त 1946 को जिन्ना के डायरेक्ट एक्शन के एलान के बाद हुए दंगों में कितने मारे गए, उजाड़े गए, कितनी महिलाओं के साथ दुष्कर्म हुआ-यह सब भूल जाओ। मतलब यह है कि मुंदहु आंख कतहुं कुछ नाहीं। इस तहजीब के पैरोकार ऐसा तो नहीं चाहेंगे, क्योंकि छोटा ही बड़े में समाहित होता है। यह मैं नहीं कर रहा हूं। डा. राजेंद्र प्रसाद की पुस्तक है- इंडिया डिवाइडेड। इसमें उन्होंने लिखा है कि मुसलमानों के लिए अलग देश की मांग सबसे पहले इकबाल ने 1930 में की थी।

दिसंबर 1930 में इलाहाबाद (प्रयागराज) में मुस्लिम लीग के सम्मेलन में अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने कहा था, 'इस्लाम का जो धार्मिक आदर्श है, वह उसकी बनाई सामाजिक व्यवस्था से जैविक रूप से जुड़ा है। एक को अस्वीकार करने का मतलब है दूसरे को भी अस्वीकार करना। इसलिए इस्लाम की एकजुटता के आदर्श को नकार कर राष्ट्रीय स्तर पर कोई राजनीति किसी भी मुसलमान के लिए अकल्पनीय है। भारत राष्ट्र राज्य की एकता की कोशिश इस्लाम के इस सिद्धांत के अस्वीकरण से नहीं, बल्कि परस्पर समन्वय और सहयोग के आधार की जानी चाहिए।' वह आगे कहते हैं, 'दुख की बात है कि आंतरिक समन्वय की हमारी खोज नाकाम रही है। यह खोज नाकाम क्यों हुई, क्योंकि शायद हम एक-दूसरे के इरादों को संदेह की नजर से देखते हैं और अंदर से एक-दूसरे पर हावी होने की

कोशिश करते हैं। इसलिए भारत के अंदर एक मुस्लिम भारत की हमारी मांग सर्वथा उचित है।' राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर ने संस्कृति के चार अध्याय में लिखा है, 'हिंदू जन्मजात अहिंसक थे। अपनी सीमा के बाहर जाकर लड़ने की उनके यहां परंपरा नहीं थी। सबसे उत्तम रक्षा यह है कि आक्रामक पर उसके घर में हमला करो। इस नीति पर हिंदुओं ने कभी अमल नहीं किया। परिणाम यह हुआ कि रक्षापरक युद्ध लड़ने की उनकी आदत हो गई।'

मुगलों और मुस्लिम शासकों की करीब आठ सौ साल की गुलामी ही नहीं, विभाजन के समय भी हिंदुओं ने अपनी इस नीति का खामियाजा भुगता। अब कहा यह जा रहा है कि प्रधानमंत्री मोदी की विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस मनाने की घोषणा से दोनों समुदायों में वैमनस्य बढ़ेगा। पुराने घाव हरे होंगे। इससे फायदा नहीं नुकसान होगा। ऐसा कहने वाले शायद हिंदू-मुसलमान संबंधों की समस्या को या तो समझते नहीं या समझना ही नहीं चाहते। यह मसला विभाजन के समय से शुरू नहीं होता कि उस समय जो हुआ उसे भूल जाएं तो सब ठीक हो जाएगा। ईरानी विद्वान अल बरूनी के मुताबिक, 'लड़ाई और मारकाट के दृश्य तो हिंदुओं ने बहुत देखे थे, लेकिन उन्हें सपने में भी यह खयाल न था कि दुनिया की एकाध जाति ऐसी भी हो सकती है, जो मूर्तियों को तोड़ने और मंदिर को भ्रष्ट करने में ही अपना सुख माने। जब मुस्लिम आक्रमण के साथ मंदिरों और मूर्तियों पर विपत्ति आई, हिंदुओं का हृदय फट गया और वे इस्लाम से तभी से जो भड़के, सो अब तक भड़के हुए हैं।'

चुनौती बनतीं कुप्रथाएं और समाज

समाज के धार्मिक आदर्शों और संस्कारों की दुहाई तब कहां चली जाती है जब समाज के पुरुष और पंच-सरपंच ही महिला को महज खरीद-फरोख्त की वस्तु बना देते हैं। हकीकत तो यह है कि इक्कीसवीं सदी में भी महिलाओं की स्थिति में कोई बहुत ज्यादा अंतर नहीं आया है। आज भी समाज की सोच महिला को वस्तु से अधिक कुछ नहीं मानने वाली ही है। जबकि इसके विपरीत विचार रखने वालों का तर्क होता है कि आज महिला स्वतंत्र है, शिक्षित है, कामकाजी है, आत्मनिर्भर है (कुछ हद तक) इसलिए यह कहना कि महिलाओं की स्थिति में कोई खास अंतर नहीं आया, गलत है। परंतु इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि महिलाओं की स्वतंत्रता, शिक्षा, नौकरी में उनकी कितनी और कैसी मर्जी शामिल होती है। संविधान में दी गई स्वतंत्रता व समानता अगर सही अर्थों में मूर्त रूप ले पाई होती तो आज महिलाएं इस तरह आत्महत्या करने को बाध्य नहीं होतीं।

महिलाओं के पास अपने जीवन के विषय में निर्णय लेने का अधिकार और सम्मानपूर्ण जीवन जीने का अधिकार संरक्षित है। फिर भी खुलेआम उनके मानवधिकारों का उल्लंघन होता है। महिलाओं द्वारा उठाई गई विरोध की आवाज को संस्कारों और परंपराओं की दुहाई देकर दबा दिया जाता है। भारत अध्यात्मवाद की संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाला देश रहा है। अनेक परंपराएं और प्रथाएं यहां की संस्कृति का हिस्सा रही हैं। समाज के विकास के शुरूआती दौर में विवाह और परिवार जैसी संस्थाएं अस्तित्व में नहीं थीं। मानव सभ्यता के प्रारंभ के बाद स्थायी निवास और निजी संपत्ति की अवधारणा ने ही विवाह संस्था को जन्म दिया। इसलिए विवाह संस्था को मानव समाज की सार्वभौमिक व आधारभूत सामाजिक संस्था माना जाता है। आदिम समाज में विवाह के अनेक रूप प्रचलित थे, लेकिन मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ उनमें भी व्यापक बदलाव आते गए। पर आज इक्कीसवीं सदी में भी ऐसी वैवाहिक परंपराएं विद्यमान हैं जो महिलाओं की स्थिति में किसी भी प्रकार के बदलाव की संभावना को नकारती हैं। जैसे राजस्थान में आटा-साटा विवाह प्रथा (जिसे विनिमय विवाह भी कहा जाता है) या फिर नाता प्रथा (जिसे चादर डालना भी कहा जाता है) मौजूद है।

आटा-साटा चलन के तहत जिस घर से एक लड़की बहू बना कर लाई जाती है उसी घर में अपनी लड़की बहू बना कर भेजनी पड़ती है। यानी लड़की के बदले लड़की का विनिमय किया जाता है। दूसरी तरफ नाता प्रथा में एक महिला को उसके पति की मृत्यु के उपरांत अथवा तलाक होने पर या वैवाहिक संबंधों में तनाव के कारण अथवा पति के बीमार होने पर किसी अन्य पुरुष को उसे बेच दिया जाता है। इस प्रथा में परिवार के पुरुष सदस्यों और जाति पंचायतों की अहम भूमिका होती है।

भारतीय संविधान में लैंगिक समानता के मूल्य को स्थापित किया गया है। लेकिन विडंबना यह है कि भारतीय समाज में व्यावहारिक जीवन में यह समानता कभी मूर्त रूप ले ही नहीं पाई। ऐसे में यह सवाल उठना लाजिमी है कि यह कैसा सभ्य समाज है जहां आज भी ऐसी कुप्रथाएं और परंपराएं प्रचलित हैं जिनमें महिलाओं की इच्छाओं और अधिकारों का कोई मतलब नहीं रह जाता। हाल में आटा-साटा कुप्रथा के कारण राजस्थान के नागौर जिले के एक गांव में एक विवाहिता ने खुदकुशी कर ली।

हैल्थ समाचार

इम्यूनिटी पर भारी न पड़े रोज काढ़ा पीना, कितना और कैसे पीना सही

कोरोना वायरस जैसी महामारी के डर से अब हर इंसान खुद को स्वस्थ्य रखने के लिए तरह-तरह के तरीके अपना रहा है। इन तरीकों में सबसे कॉमन है काढ़े का सेवन। लोग अपनी इम्यूनिटी को मजबूत बनाने के लिए दिन में तीन से चार बार काढ़ा पीने लगे हैं। हालांकि, आयुर्वेद में भी काढ़ा पीने के अनेक फायदे बताएं हैं लेकिन इस उपचार को लोग अपनी मनमर्जी से कर रहे हैं। क्या आप जानते हैं काढ़ा का ज्यादा सेवन भी हानिकारक साबित हो सकता है? हम आपको बताते हैं क्या है इसे पीने का सही और गलत तरीका।

काढ़ा पीने का गलत तरीका : किसी भी चीज की अति नुकसान ही करती है। और यही बात काढ़े पर भी लागू होती है। न्यू यॉर्क में रहने वाली आयुर्वेदिक डॉक्टर निधि पांडे का कहना है कि अगर काढ़े को सही तरीके से नहीं पीया गया तो ये फायदे से ज्यादा हानि पहुंचा सकता है। काढ़े को हद से ज्यादा उबालना या फिर उसे लगातार ज्यादा मात्रा में पीने से यूरिन इंफेक्शन, स्किन में ड्राईनेस, मुहांसे, एसिडिटी और मुंह में छाले जैसी दिक्कतें हो सकती हैं।

काढ़े को ज्यादा ना उबालें : काढ़े में डाले जाने वाले मसालों को ज्यादा देर उबालने से उसका असर ज्यादा नहीं होता है। पीने के बाद पेट में जलन और एसिडिटी होने लगती है। मसालों को कुछ मिनट के लिए उबालना या स्टीम देना ही काफी होता है।

सिर्फ आधा कप काढ़ा पिएं : क्या आप उन लोगों में से हैं जो एक दिन में तीन बार काढ़ा पीते हैं? अगर ऐसा है तो इस आदत को बदल लें। एक दिन में आधे कप से ज्यादा काढ़े का सेवन ना करें। सर्दी के मौसम में भले ही इसे दो बार पी सकते हैं।

ठंडे मसाले मिलाएं : काढ़े में पड़ने वाले सभी मसाले गरम होते हैं इसलिए उनमें कुछ ठंडे मसाले जरूर मिलाएं।

ठंडे मसलों में मुलेठी, इलाइची और गुलाब की पत्तियां हो सकती हैं। ये मसाले पेट से जुड़ी दिक्कतों से दूर करेंगे ।

4. ठंडी चीजों का सेवन करें: काढ़ा पीने से शरीर में गर्मी पैदा होती है, जिससे मुहांसे और स्किन ड्राई हो सकती है। इन सब परेशानियों से बचने के लिए ठंडी खाने-पीने की चीजें खाएं जैसे संतरा।

बच्चों के दांत को स्वस्थ रखने के लिए ऐसे करें देखभाल, कीड़ों की समस्या से भी मिलेगा छुटकारा

बच्चों की सेहत का ख्याल रखने के साथ उनके दांतों का ख्याल रखना भी बहुत जरूरी होता है। बच्चों के दांतों में अक्सर कीड़े की समस्या देखने को मिलती है। ऐसा इसलिए क्योंकि बच्चों को चॉकलेट और मीठा खाने की बहुत आदत होती है जिस कारण उनके दांतों को कीड़े का शिकार होना पड़ता है। दांतों में कीड़ा लगने पर आपको तुरंत इसका इलाज कराना चाहिए, अगर आप ऐसा नहीं करते तो ये आगे जाकर बच्चे के दांत और मसूड़ों में परेशानी पैदा करता है। इसमें बच्चों के दांत में कैविटी, दर्द और दांत सड़ने लगते हैं। इसलिए ये आपके लिए जरूरी है कि आप बच्चों के दांत में लगे कीड़ों पर ध्यान दें और उन्हें स्वस्थ रखें। इसके लिए आपको ये जानना जरूरी है कि अगर बच्चे के दांत में कीड़ा लगता है तो आपको क्या करना चाहिए और कैसे देखभाल करनी चाहिए।

नियमित रूप से जांच कराएं

अगर आप अपने बच्चों के दांतों को स्वस्थ रखना चाहते हैं तो आपके लिए जरूरी है कि आप नियमित रूप से बच्चे के दांत की जांच कराएं। इससे आप किसी भी दांत से संबंधित रोग को फैलने से रोक सकेंगे और बच्चे के दांतों को स्वस्थ रख सकेंगे। इसके साथ ही आप अपने बच्चों के दांतों की स्थिति भी जान सकेंगे और डॉक्टर आपकी मदद करेगा कि आपको अपने बच्चों के दांतों के लिए क्या करना चाहिए।

खाने की आदत

बच्चे कुछ भी खाने में सोचते नहीं हैं, यही वजह होती है कि उनके दांतों में कीड़े लगने की समस्या पैदा होती है। इसलिए आपको ये देखना चाहिए कि आपके बच्चे की भोजन की आदत क्या है। आप बच्चे के द्वारा खाए जाने वाली सभी चीजों पर ध्यान रखें। अगर आपक बच्चा चॉकलेट, आइसक्रीम, कैंडी जैसी चीजों का सेवन बहुत ज्यादा मात्रा में कर रहा है तो आपको इस पर रोक लगाने की जरूरत है।

ड्रिंक्स

किसी भी तरह की ड्रिंक्स जो बच्चे पसंद करते हैं, उन सभी में बहुत ज्यादा मात्रा में शुगर की मात्रा होती है। जबकि इन ड्रिंक्स को बच्चों को एक सीमित मात्रा में पीना चाहिए। इसलिए पैरेंट्स को बच्चों के द्वारा पी जाने वाली जूस या ड्रिंक्स पर नजर रखनी चाहिए और उन्हें कम से कम पीने की आदत देनी चाहिए। वहीं, अगर आपके बच्चे के दांत में कीड़ा लगना शुरू हो गया है तो इसे आज से ही बंद कर दें, नहीं तो इन ड्रिंक्स से बच्चों के दांत को नुकसान हो सकता है।

ज्यादा से ज्यादा पानी पीने की आदत

पानी हमारे पूर्ण स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है, ये तो आप सभी जानते हैं। बच्चों के दांत को स्वस्थ रखने के लिए भी आप बच्चों को पानी पीने की आदत डालें। इसके अलावा आप बच्चों को खाना खाने के बाद पानी पीने की सलाह जरूर दें। इससे दांतों में लगने वाले कीड़ें और संक्रमण से आसानी से बचा जा सकता है।

रात में सोने से पहल ब्रश करना जरूरी

बच्चे अक्सर ब्रश करने में आलस करते हैं, जबकि दांत में लगे कीड़े से निपटने का एक बेहतरीन तरीका है ब्रश। आप अपने बच्चों को रोजाना रात में सोने से पहले ब्रश करने की आदत डालें। रात में ब्रश करना इसलिए जरूरी हो जाता है, क्योंकि बैक्टीरिया और संक्रमण रात में ज्यादा तेजी से फैलने का काम करते हैं। इसलिए आप बच्चों को रोजाना दिन में 2 बार ब्रश करने की आदत जरूर दें।

इन शाकाहारी चीजों से नहीं होगी शरीर में प्रोटीन की कमी, बनेगी अच्छी फिटनेस !

हमारे शरीर के लिए प्रोटीन कितना ज्यादा जरूरी है इसके बारे में सभी जानते हैं। इससे न केवल मांसपेशियों की अच्छी ग्रोथ होती है बल्कि वजन भी कंट्रोल में रहता है। ज्यादातर लोग सबसे अच्छे प्रोटीन स्रोत में मांस-मछली और अंडों के बारे में ही जानते हैं। वहीं, अच्छी फिटनेस बनाने वालों को अधिक प्रोटिन की जरूरत होती है। ऐसे में समस्या उन लोगों के लिए बढ़ जाती है जो शाकाहारी होते हैं और उन्हें पनीर के अलावा किसी अन्य प्रोटीन स्रोत के बारे में जानकारी नहीं है। अगर आप भी उन्हीं में से एक हैं जो शाकाहारी प्रोटीन युक्त आहारों के बारे में नहीं जानते हैं और अच्छी फिटनेस बनाना चाहते हैं तो आपको निराश होने की जरूरत नहीं है।

चिया बीज : फ़िटनेस एक्सपर्ट्स का मानना है कि चिया के बीज मांसपेशियों के लिए काफी अच्छे साबित होते हैं। इसमें कम कैलोरी होने के अलावा फाइबर, प्रोटीन और ओमेगा 3 फैटी एसिड की मात्रा ज्यादा होती है। ऐसे में प्रोटीन पाने के लिए आप अपने आहारों में चिया बीज को शामिल कर सकते हैं। इसे आप पानी या दूध में भिगोकर सेवन कर सकते हैं।

दाल : कई प्रकार की दाल होती हैं, इनमें प्रोटीन की अच्छी मात्रा होने के साथ आयरन, फाइबर और पोटेशियम मौजूद होता है। इसलिए आपको रोजाना अपने आहार में दाल को भी शामिल करना चाहिए। अगर आप रोजाना आधा कप पकी हुई दाल का सेवन करेंगे तो इससे आपको 9 ग्राम प्रोटीन प्राप्त होगा।

चने : काबुली चने को कई तरह से खाया जा सकता है। इसमें प्रोटीन की मात्रा ज्यादा होती है। इसे आप भीगोकर, सलाद, करी और भुनकर भी सेवन कर सकते हैं। ये खाने में स्वादिष्ट होने के साथ ताकत से भरपूर्ण भी है। अगर आप 150 ग्राम छोले का सेवन करते हैं तो आपको 10/7 ग्राम प्रोटीन मिलता है।

टोफू : टोफू भी प्रोटीन का एक अच्छा स्रोत माना जाता है। फ़िटनेस एक्सपर्ट्स का मानना है कि टोफू का सेवन करने से शरीर को हर जरूरी अमीनो एसिड प्राप्त होते हैं। टोफू को स्वादिष्ट बनाने के लिए इसमें मसाले मिलाए जा सकते हैं। इसके प्रति 100 ग्राम में 10-19 ग्राम प्रोटीन पाया जाता है।

ग्रीक योगर्ट : फ़िटनेस एक्सपर्ट्स का मानना है कि ग्रीक योगर्ट प्रोटीन का एक अच्छा स्रोत होता है। इसलिए इसे भी आप अपने आहारों में शामिल कर सकते हैं। ग्रीक योगर्ट के 100 ग्राम में प्रटीन 10 ग्राम की मात्रा होता है।

बादाम : बादाम जिस तरह से दिमाग को तेज बनाने में मदद करता है, ठीक वैसे ही ये मांसपेशियों के लिए भी अच्छा रहता है। इसमें प्रोटीन और विटामिन ई पाया जाता है, जो एक अच्छा स्वस्थ स्रोत है। अगर आप 1/2 कप बादाम का सेवन करते हैं तो आपको करीब 16 l5 ग्राम प्रोटीन प्राप्त होता है।

मूंगफली : छोटी मूंगफली के बीज का सेवन करना शरीर के लिए अच्छा रहता है। इसमें प्रोटीन और हेल्दी फैट होता है। अगर आप पीनट बटर का सेवन करते हैं तो ये भी प्रोटीन का उच्च सोर्स माना जाता है। आप मूंगफली को स्नैक की तरह खा सकते हैं। इसके आधे कप का सेवन करने से आपको 20 l5 ग्राम प्रोटीन मिलता है। वहीं, पीनट बटर को ब्रेड या रोटी के साथ सेवन कर सकते हैं। एक चम्मच पीनट बटर में 8 ग्राम प्रोटीन होता है।

क्विनोआ : क्विनोआ भी एक अच्छा प्रोटीन स्रोत माना जाता है। इसके प्रति कप में करीब 8 ग्राम प्रोटीन होता है। इसे कई तरह से सेवन किया जा सकता है। आप चाहें तो सलाद या फिर चावल में क्विनोआ को शामिल कर सकते हैं। इसके प्रति 100 ग्राम में 4/7 ग्राम प्रोटीन की मात्रा होती है।

मल्टीविटामिन्स क्यों होता है जरूरी? कोरोनो के मरीजों के लिए कैसे है ये फायदेमंद

ये तो आप सभी जानते हैं कि शरीर को सही तरीके से काम करने के लिए पर्याप्त मात्रा में पोषण की जरूरत होती है, जिसमें सबसे ज्यादा जरूरत विटामिन्स की होती है जो हमारे लिए काफी जरूरी होते हैं। इसकी पूर्ति हम अपनी डाइट में पोष्टिक चीजों को शामिल करके करते हैं। हेल्दी डाइट लेने से हम सभी तरह के विटामिन्स और पोषक तत्वों की कमी को दूर कर सकते हैं। इसकी मदद से आप कई संक्रमण, गंभीर रोग और बैक्टीरिया से खुद को बचाकर रख सकते हैं। वहीं, अगर आप बीमार भी होते हैं या किसी संक्रमण का शिकार होते हैं तो भी मल्टीविटामिन्स आपको जल्द स्वस्थ करने के लिए काम करते हैं और आपके शरीर से उन संक्रमण को दूर करने का काम करते हैं। यही वजह है कि कोरोना से पीड़ित मरीजों को जल्द स्वस्थ करने के लिए भी मल्टीविटामिन्स के डोज दिए जाते हैं। आइए इस

लेख के जरिए ये जानने की कोशिश करते हैं कि कोरोना के मरीजों मल्टीविटामिन्स क्यों दिए जाते हैं और ये हमारे स्वास्थ्य के लिए क्यों जरूरी है।

मल्टीविटामिन्स क्यों है जरूरी : मल्टीविटामिन्स आप अपनी डाइट को बेहतर करके भी ले सकते हैं, जिसकी मदद से आप लंबे समय तक खुद को स्वस्थ रख सकते हैं। लेकिन कुछ लोग इसके कैप्सूल भी लेते है जिससे कि इन विटामिन्स की पूर्ति हो सके। ये हमारे स्वास्थ्य में कई तरह के फायदे पहुंचाता है जिसके लिए मल्टीविटामिन्स जरूरी हो जाता है। नियमित रूप से मल्टीविटामिन्स का सेवन करने से आप संक्रमण से आसानी से लड़ सकते हैं और खुद को जल्द स्वस्थ कर सकते हैं। अगर आप बीमार होने के दौरान पूरी तरह से खुद को सुस्त और कम ऊर्जा के साथ देख रहे हैं तो आप मल्टीविटामिन्स की मदद से ऊर्जा के स्तर को बढ़ा सकते हैं, जो आपको लंबे समय तक एक्टिव रखने में आपकी मदद करता है। तनाव बढ़ने के दौरान अगर आप मल्टीविटामिन्स लेते हैं तो इससे आप खुद को कम समय में तनावमुक्त कर सकते हैं।

एक्सरसाइज करने वाले लोग या रोजाना भागदौड़ करने वाले लोगों के लिए भी मल्टीविटामिन्स फायदेमंद होती है, क्योंकि ये आपके मांसपेशियों में मजबूती लाने के साथ उनके विकास में योगदान करती है। कोरोना मरीजों के लिए कैसे फायदेमंद है मल्टीविटामिन्स के डोज आपने कई कोरोना के मरीजों को देखा होगा जो डॉक्टर द्वारा दिए गए मल्टीविटामिन्स डोज ले रहे हैं, जैसा कि हमने आपको पहले ही बताया कि मल्टीविटामिन्स में कई प्रकार के विटामिन्स शामिल होते हैं जो आपको स्वस्थ रखने में मदद करते हैं। साथ ही ये आपको किसी भी संक्रमण से लड़ने में आपकी मदद करते हैं। लेकिन कोरोना के दौर में मल्टीविटामिन्स देना कई लोगों को चौंका सकता है। लेकिन इसमें आपको चौंकने की जरूरत नहीं है। क्योंकि ये आपको सही ऊर्जा देने के साथ पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्वों की पूर्ति करता है।

देश-प्रदेश समाचार

पूर्व प्रधानमंत्री स्व राजीव गांधी की जन्म जयंती, यूथ कांग्रेस की ओर से दो दिवसीय खेलकूद प्रतियोगिता

डूंगरपुर।

जिले में पूर्व प्रधानमंत्री स्व राजीव गांधी की जन्म जयंती पर यूथ कांग्रेस की ओर से गुरुवार को मझोला गाँव में दो दिवसीय खेलकूद प्रतियोगिता का आगाज हुआ। यूथ कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष व डूंगरपुर विधायक गणेश घोघरा ने प्रतियोगिता का आगाज किया। प्रतियोगिता में वॉलीबॉल की 41 और कबड्डी की 19 टीमें भाग ले रही है। वही तीरंदाजी में 50 से ज्यादा तीरंदाज निशाना साधेंगे। इधर इस मौके पर आयोजित प्रतियोगिता के उदघाटन समारोह में यूथ कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष गणेश घोघरा, बिछीवाडा प्रधान देवराम रोत मौजूद रहे। इस दौरान यूथ कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष गणेश घोघरा नेकहा कि गांवों में खिलाड़ियों की कमी नहीं है, लेकिन इन खिलाड़ियों को प्रोत्साहित कर आगे लाने की जरूरत है और इसके लिए राज्य सरकार कई तरह के प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा कि ओलंपिक खेलों में नीरज चोपड़ा ने गोल्ड मैडल हासिल कर देश का नाम रोशन किया उसी तरह हर खिलाड़ी अपना लक्ष्य तय कर ले और फिर आने खेल को खेले। उन्होंने खिलाड़ियों को नशे से दूर रहते हुए अच्छे खानपान और खेलो पर ध्यान देने के लिए प्रेरित किया।

विवाहिता को जिन्दा जला देने का मामला, आरोपियों को गिरफ्तार करने की मांग

सीमलवाडा।

धम्बोला थाना क्षेत्र के करावाडा गांव में एक विवाहिता को जिन्दा जला देने के मामले में सभी आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं होने से आक्रोशित पीहर पक्ष बुधवार को कलेक्ट्रेट पहुंचा। जहा पीहर पक्ष ने एसपी डूंगरपुर से मुलाक़ात करते हुए परिवाद सौपा और सभी आरोपियों की गिरफ़्तारी की मांग की है। पीहर पक्ष ने बताया कि धम्बोला थाना क्षेत्र के करावाड़ा गांव में 19 जुलाई को विवाहिता ससुराल में जल गई थी और बाद में उदयपुर में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया था। मृत्यु से पहले मृतका ने पति-ननद सहित। लोगो पर जला देने के बयान मजिस्ट्रेट को दिये थे। इस पर पुलिस ने हत्या का केस दर्ज किया था। इधर, पीहर पक्ष के लोग आज कलेक्ट्री पहुंचे और पुलिस पर आरोप लगाया कि पुलिस जान बूझकर पति के अलावा अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी नही कर रही है। जबकि पीड़िता ने अपने बयानों में नाम तक लिए थे। ऐसे में धम्बोला पुलिस की भूमिका संदिग्ध है। पीहर पक्ष ने एसपी को परिवाद सौंपा और निष्पक्ष जांच सहित शेष आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग रखी।

पहली बार आरएएस-2021 परीक्षा 2 दिन कराने की तैयारी

27 और 28 अक्टूबर की डेट फाइनल, अभ्यर्थियों की संख्या पर तय होगा कि कितने चरणों में होगी परीक्षा

अजमेर.

राजस्थान लोक सेवा आयोग की ओर से राजस्थान राज्य एवं अधीनस्थ सेवाएं संयुक्त प्रतियोगी परीक्षा 2021 (प्रारंभिक) की तारीख घोषित कर दी गई है। यह परीक्षा 27 व 28 अक्टूबर को होगी। आयोग ने इस संबंध में गुरुवार को आदेश जारी किए हैं। आयोग के सचिव शुभम चौधरी ने बताया कि अंतिम तिथि तक प्राप्त आवेदन-पत्रों की संख्या के आधार पर परीक्षा चरणों का निर्धारण किया जाएगा। उसके बाद परीक्षा कार्यक्रम भी जारी कर दिया जाएगा। आवेदन ऑनलाइन भरे जा रहे हैं। अंतिम तिथि 2 सितंबर है। कुल 988 पदों में 363 पद राज्य सेवा के और 625 पद अधीनस्थ सेवाओं के हैं। अब तक प्रदेश के 1 लाख 60 हजार से अधिक अभ्यर्थी आवेदन कर चुके हैं। आयोग ने पाठ्यक्रम वेबसाइट पर जारी कर दिया है।

दो दिन होगी परीक्षा-इस बार आरएएस प्रारंभिक परीक्षा दो दिन होगी। आयोग द्वारा जारी परीक्षा तिथि से यह जानकारी मिली है। अभी तक एक ही दिन आरएएस प्रारंभिक परीक्षा होती थी। आरएएस प्री 2018 का आयोजन आयोग ने 5 अगस्त 2018 को एक ही दिन किया था।

20 जुलाई को जारी किया था विज्ञापन-आयोग ने आरएएस-आरटीसी 2021-22 का विज्ञापन 20 जुलाई को जारी किया गया था। इसके लिए ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया 28 जुलाई से शुरू होकर 27 अगस्त तक चलनी थी, लेकिन तकनीकी कारणों का हवाला देते हुए इस प्रक्रिया को स्थगित कर दिया गया। बाद में नई तिथि घोषित की गई थी। 4 अगस्त से ऑनलाइन आवेदन शुरू किए गए थे। 2 सितंबर तक भरे जाएंगे। पूर्व सैनिक कोटे का लाभ केवल राज्य के लोगों को-आयोग की ओर से जारी आदेश के मुताबिक, राज्य सरकार ने 1 अगस्त को अधिसूचना जारी की है। इसके अनुसार, राजस्थान के मूल निवासी भूतपूर्व सैनिकों को ही भूतपूर्व सैनिक वर्ग का लाभ दिया जाएगा।

एनडीए में महिलाओं की एंट्री का रास्ता खुला

सुप्रीम कोर्ट ने जारी किया अंतरिम आदेश

नई दिल्ली।

हाल ही में महिलाओं को परमानेंट सर्विस कमीशन में शामिल करने का फैसला देने के बाद अब सुप्रीम कोर्ट ने एक और बड़ी राहत दी है। सुप्रीम कोर्ट ने महिलाओं को अब एनडीए यानी नेशनल डिफेंस एकेडमी की परीक्षा में भी बैठने की अनुमति दे दी है। यह आदेश इसी साल 5 सितंबर को होने वाली एनडीए की परीक्षा से लागू होगा। मामले की सुनवाई के दौरान सेना ने कहा कि एनडीए परीक्षा में महिलाओं को शामिल न करना पॉलिसी डिसिजन है। इस पर शीर्ष अदालत ने फटकार लगाते हुए कहा कि यदि यह पॉलिसी डिसिजन है तो यह भेदभाव से पूर्ण है। हालांकि 5 सितंबर को परीक्षा में बैठने का आदेश सुप्रीम कोर्ट के अंतिम निर्णय के अधीन होगा। इससे पहले केस की सुनवाई के दौरान केंद्र सरकार ने मंगलवार को अपना पक्ष रखते हुए कहा था कि महिलाओं को एनडीए परीक्षा में मौका न देना, उनके मूलभूत अधिकारों के हनन का मामला नहीं है। यही नहीं केंद्र सरकार ने कहा था कि एनडीए के जरिए आने वाले पुरुष कर्मचारियों को उनके मुकाबले करियर में कोई स्पेशल बढ़त नहीं मिलती। महिलाओं के लिए सेना में एंट्री का एकमात्र रास्ता शॉर्ट सर्विस कमिशन ही रहा है। बता दें कि बीते दिनों ही शीर्ष अदालत ने सेना से महिलाओं को भी परमानेंट कमीशन में लिए जाने को कहा था। यही नहीं अदालत ने सेना के नियमों को गलत करार देते हुए कहा था कि ये बेतुके और मनमाने हैं। दरअसल वकील कुश कालरा की ओर से महिलाओं को एनडीए और इंडियन नेवल अकादमी में शामिल किए जाने की मांग को लेकर अर्जी दाखिल की गई थी। उस याचिका पर सुनवाई करते हुए ही सुप्रीम कोर्ट ने यह फैसला दिया है। फिलहाल इन दोनों अकादमियों में महिलाओं की भर्ती नहीं की जाती। सुप्रीम कोर्ट ने इस अर्जी पर केंद्र सरकार से जवाब मांगा था। इस पर सरकार का कहना था कि यह अर्जी आम जनहित में नहीं है बल्कि एक पॉलिसी डिसिजन को लेकर ही है। इसी पर बुधवार को एक बार फिर से सुनवाई शुरू हुई, जिसमें जस्टिस संजय किशन कौल और ऋषिकेश रॉय ने महिलाओं के पक्ष में यह फैसला दिया है।

श्रावण मास में वागड़ के प्रसिद्ध गौरेश्वर महादेव का किया गया मनोहारी श्रृंगार

डूंगरपुर।

वागड के डूंगरपुर और बांसवाड़ा जिले में 2200 से अधिक शिव मंदिर मौजूद हैं, जबकि इन दोनों जिलों का क्षेत्रफल लगभग 8 ।00 वर्ग किलोमीटर है। इस क्षेत्र में मौजूद मंदिरों में कई एक हजार साल से भी प्राचीन हैं ।प्राचीन मंदिरों में शुमार देवसोमनाथ मंदिर बारहवीं सदी में राजा अमृतपाल देव ने कराया था। सोमनदी के तट पर होने के कारण इसे देव सोमनाथ कहा जाता है। इस मंदिर के निर्माण में सीमेंट या चूने का इस्तेमाल नहीं लिया गया। बल्कि पत्थरों को काटकर एक-दूसरे से क्लेंप कर ऐसे फंसाया गया है कि वह हिलते ही नहीं। तीन मंजिला मंदिर होने के बावजूद आज भी यह बेहद दर्शनीय है, जिसके कला वैभव को देखने हजारों पर्यटक वहां पहुंचते हैं।

यहां भगवान राम और लक्ष्मण ने की पूजा

सीमलवाड़ा क्षेत्र में प्राकृतिक छटा, जंगल क्षेत्र और द्रोही नदी के किनारे एक हजार साल से अधिक पुराना भगवान शिव का मंदिर है। जिसे आज नीलकंठ महादेव मंदिर कहा जाता है। लोगों की मानें तो सतयुग में भगवान राम ने अपने भाई लक्ष्मण के साथ और द्वापर युग में पांडवों ने इसी शिव लिंग की पूजा की थी, जो यहां स्थापित हैं। पूर्व में यहां खुले में शिवलिंग विराजित थे, जिस पर लगभग एक हजार साल पहले मंदिर बनाया गया।

इनका कहना है वागड में ऐसे कई शिव मंदिर हैं, जिनका निर्माण आठवीं सदी से एक हजार सदी से पहले हुआ है। इनमें देवसोमनाथ मंदिर आज भी अच्छी स्थिति में है। सर्वाधिक पुराने मंदिरों में सीमलवाड़ा क्षेत्र में द्रोही नदी पर स्थित मंदिर है, जिसके बारे में इतिहास में भी उल्लेख है कि उसे मोहम्मद गजनवी ने ध्वस्त करने की कोशिश की थी।

वागड़ का केदारेश्वर

सागवाड़ा-आसपुर मार्ग पर ग्राम पंचायत ओड़ से तीन किलोमीटर दूर हनैला क्षेत्र में ऊंची पहाड़ी पर स्थित जेथोलेश्वर महादेव मंदिर वागड़ में केदारेश्वर के रूप में अपनी पहचान लिए हुए है। यह मंदिर 400 वर्ष पुराना माना जाता है। कहा जाता है कि सागवाड़ा के जेथा सलाट नामक सोमपुरा ब्राह्मण की गाय को चरवाहा हनैला क्षेत्र में वन में चराई के लिए ले जाया करता था। शाम के समय दूध निकालने के दौरान गाय के थन से दूध नहीं निकलता था। एक दिन जेथा स्वयं चरवाहे के साथ जंगल में गाय के पीछे गया उन्होंने देखा कि एक पहाड़ी पर जाकर झाड़ियों के बीच खड़ी होकर गाय के थन से दूध स्वत: निकल रहा था। यह देख कर जेथा कुल्हाड़ी लेकर उस पहाड़ी पर गया। झाड़ियां काटने लगा तब अचानक झाड़ियों के बीच कुल्हाड़ी एक पत्थर से लगी तब उसने झाड़ियां हटाकर देखा तो शिवलिंग नजर आया। इसके बाद हनैला सहित ओड, कोपड़ा और गामड़ा चरणीय के ग्रामीणों से मिलकर शिव मंदिर की स्थापना की। मंदिर का नाम जेथोलेश्वर रखा।

वास्तु कला का नायाब उदाहरण है हजारेश्वर महादेव मंदिर

डूंगरपुर शहर से दो किमी दूर उदयविलास पैलेस के आगे हजारेश्वर महादेव मंदिर है। इस मंदिर में विश्वेश्वर महादेव स्थापित है। मंदिर में ही दस इंच ऊंची वर्गाकार पीठिका बनी हुई है ।इसके मध्य जलाधारी बनी हुई है। इस पर 121 एकादश रुद्र स्वरुप के रूप में विराजमान है। इसके चारो कोनो में रुद्रद पंचायतन देवताओं के यंत्र और बीजाक्षर उत्कीर्ण है। करीब 300 साल से पुराने इस मंदिर में वास्तु का नायाब उदाहरण है ।मंदिर में बीजाक्षर मंत्र उत्कीर्ण कर रुद्र पंचायत विराजमान कराया है।

नेपाल के पशुपतिनाथ के बाद यह दूसरा रुद्राक्ष शिवलिंग है जो ठाकरड़ा विराजित है

डूंगरपुर मार्ग पर ठाकरड़ा गांव में गोमती नदी के तट पर करीब 581 साल पुराना सिद्धनाथ महादेव मंदिर लोगों की अटूट आस्था का केंद्र बना हुआ है। इस प्राचीन शिवालय में ठीक रूद्राक्ष की तरह दिखने वाला भगवान सिद्धनाथ का स्वयंभू शिवलिंग स्थापित है। कहते हैं नेपाल के पशुपतिनाथ के बाद यह दूसरा रुद्राक्ष शिवलिंग है जो यहां विराजित है। इसे सिद्धेश्वर, काशी विश्वनाथ व हेजनाथ महादेव के नाम से भी पुकारा जाता है। बुजुर्ग बताते हैं कि इस मंदिर का निर्माण राजा गुहिल के वंशज खुमाणवंशी प्रतापसिंह के पुत्र महारावल गोपीनाथ के शासन काल में मेघ-बड़नगरा नागर ब्राह्मण ने कराया था।

गौभक्त जगदीश गोपाल जी महाराज 26 को सागवाड़ा में, तैयारियों को लेकर बैठक हुई

सागवाड़ा।

परम गौभक्त पूज्य गौराष्ट्र संत गुरुदेव भगवान श्री जगदीश गोपाल जी महाराज 26 को सागवाड़ा आएंगे। उनके आगमन पर भव्य स्वागत की तैयारियों को लेकर सागवाड़ा में बैठक हुई। संत गुरुदेव भगवान श्री जगदीश गोपाल जी महाराजअपने 31 वर्षीय गो पर्यावरण एवं अध्यात्म चेतना पदयात्रा के संकल्प को पूर्ण करने हल्दी घाटी से सम्पूर्ण भारतवर्ष मे गौ माता के प्रति जागृति लाने के लिए राजस्थान के अंतिम जिले डूगरपुर में प्रवास पर है। बैठक मेंकार्यक्रम के आयोजन एवं उसकी तैयारी बाबत चर्चा की गई। व गौशाला के कार्य की अब तक की प्रगति की समीक्षा एवं आगे की कार्य योजना पर विचार किया गया। बैठक में श्री श्री उत्तम गोपाल कृष्ण गौशाला समिति के समस्त पदाधिकारी एवं सदस्यगण, सन्मति गौशाला के समस्त सदस्य, गौरक्षक दल के समस्त सदस्य, गौशाला के समस्त दानदाता, समस्त समाजों के अध्यक्ष एवं कार्यकारिणी के सदस्य मय पंच, नगर के समस्त पार्षदगण, श्रीमद भागवत सत्संग समिति, मानस मण्डल, गायत्री परिवार,गणेश मण्डल, विभिन्न समाजो के गणपति मण्डल, भारत विकास परिषद, संस्कार भारती, अम्बाजी भण्डारा टीम, बजरंग दल, दुर्गा वाहिनी, रुद्र वाहिनी, हिन्दू युवा वाहिनी, विश्व हिन्दू परिषद पेंशनर समाज, एकलव्य भील सेवा संस्थान विभिन्न संगठनो के पदाधिकारी एवं सागवाड़ा, पुनर्वास कोलोनी तथा आसपास के समस्त गौभक्तो मौजूद रहे।

सेवा दल की बस को ब्लॉक अध्यक्ष नागदा ने दिल्ली के लिए रवाना किया

डूंगरपुर।

आधुनिक भारत के निर्माता संचार क्रांति के जनक भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय राजीव गांधी जी की जयंती पर दिल्ली में आयोजित होने वाले अखिल भारतीय कांग्रेस सेवादल सम्मेलन में सम्मिलित होने जा रहे बच्चू लाल खराड़ी के नेतृत्व में डूंगरपुर सेवा दल के कार्यकर्ताओं के दल की बस को डूंगरपुर ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भरत नागदा ने झंडी दिखाकर के रवाना किया। इस अवसर पर वरिष्ठ कार्यकर्ता खातुराम बागड़िया, बच्चू लाल खराड़ी, विष्णु कलासुआ, उर्मिला अहारी, नरेश पंड्या, राजेंद्र कुमार डोडा, प्रभूदास बरांडा, कमलेश ननोमा, राजेंद्र कुमार डोडा, नरेश कलासुआ, सुरेश यादव,पन्नालाल डोडियार,अर्जुन कटारा, जितेंद्र कटारा, लक्ष्मण डामोर, विपुल मीणा,गौतम लाल यादव, भगु परमार, शांतिलाल पारगी, परमेश्वर खराडी, रूपसी मीणा, कमलेश ननोमा, रमणलाल डामोर, शिवराम रोत, जयंतीलाल भगोरा, रामचंद्र गोदा,गोविंद डामोर, वासुदेव कटारा, देवीलाल अहारी, नाथू लाल कटारा, चुन्नीलाल बरंडा, अमृतलाल डिण्डोर, सुनील यादव, सुनंदा ननोमा, दीपिका अहारी, मेगा रोत, मेनका, जया यादव, बसंती रोत, वैभव खराड़ी, अरुण बासिया मौजूद रहे।

48 दिवसीय भक्तामर महामंडल विधान चल रहा भक्तिभाव से

मुनि पूज्यसागर महाराज के सानिध्य में हो रहा है आयोजन, 48 अर्घ्य, श्रीफल, दीपक, नैवेद्य भी चढ़ाए गए

पंचामृत अभिषेक करते हुए मुनि पूज्यसागर महाराज

सागवाड़ा।

दिगम्बर जैन मंदिर, भीलूड़ा में मुनि पूज्यसागर महाराज के सानिध्य में 48 दिवसीय भक्तामर महामंडल विधान भक्तिभाव से आयोजित हो रहा है। विधान के 11वें दिन सुबह 4 बजे 1008 भगवान के नामों के मंत्र की आहुति दी गई। उसके बाद मुनि के सानिध्य में मूलनायक भगवान शान्तिनाथ भगवान व आदिनाथ भगवान का दूध, दही, लाल चंदन, सफेद चंदन, अनेक जड़ी बूटियों अभिषेक व शांतिधारा कर विधान की शुरुआत हुई। अभिषेक के बाद नव-देवता का पूजन हुआ और श्री 1008 शान्तिनाथ भगवान और श्रीआदिनाथ भगवान की पूजा-अर्चना हुई। 56 प्रकार से बने नैवेद्य से भी पूजन किया गया।

पंडित धनपाल शाह, संगीतकार पिंटू भैया ने भक्तामर विधान की संगीतमय पूजा कराई। विधान में भक्तों ने 24 तीर्थंकर भगवान के यक्ष-यक्षणी को विधि विधान से अर्घ्य चढ़ाया। सौधर्म इन्द्र का लाभ संजय-प्रियंका सेठी किशनगढ़ को प्राप्त हुआ। विधान पर अर्घ्य समर्पण संघस्थ दीदी तुष्टि जैन ने किए। 64 चंवर के साथ श्रावक -श्राविकाओं ने नृत्य किया। धन, मान, सामना,विद्या प्राप्त की भावना से 6-36 नम्बर के काव्य की 56-56 अर्घ्यों के साथ विशेष आराधना की गई। भक्तामर विधान की आराधना करते हुए 48 अर्घ्य,श्रीफल,दीपक, नैवेद्य चढ़ाए गए।

जलेबी, रबड़ी, खीर, पूड़ी, गुलाबजामुन, मिठाई, पेटे, सोनपापड़ी, तिल्ली के लड्डू, खोपरे की मठाई आदि पकवान चढ़ाए गए और दीपक, धूप, श्रीफल आदि साम्रगी से पूजन हुआ।

भक्तामर की महिमा-जैन ग्रंथों में भक्तामर की महिमा का वर्णन बताते हुए कहा गया कि राजा भोज ने आचार्य मानतुंग स्वामी को 48 तालों से बंद जेल में डाल दिया गया। आचार्य समता भाव से जेल में बैठे रहे। उन्होंने किसी प्रकार से संक्लेश नहीं करते हुए भगवान आदिनाथ की स्तुति करते हुए 48 काव्य की रचना की। जैसे- जैसे एक- एक काव्य की रचना हो रही थी, वैसे- वैसे एक- एक ताले टूटते चले गए। यह देखकर राजा भोज ने अधर्म, हिंसा को छोड़ धर्म,अहिंसा को स्वीकार करते हुए आचार्य मानतुंग से क्षमा मांगी। यह भक्तामर काव्य शारीरिक,मानसिक रोगों को नाश करता है।

इस अवसर पर कांतिलाल भरड़ा, चेतनलाल भरड़ा, जयंतीलाल भरड़ा, रमणलाल टुकावत, ललित जैन धनपाल जैन, कमलेश टुकावत, शेलेन्द्र भरड़ा, जयवंत भरड़ा, जयन्त भरड़ा, भवेश जैन, अमित टुकावत,अमित भरड़ा, सुशान्त जैन, दिलीप शाह, कमलेश शाह, विक्रान्त महिला मंडल युवा मंडल के लोग मौजूद थे।

वागड़ के साहित्यिकार जिन्होंने बढ़ाया क्षेत्र मान, मीडिया पर भी सक्रिय हैं रचनाकार

डूंगरपुर।

वागड़ अंचल की बोली 'वागड़ी' है। लिपि देवनागरी होने से वागड़ में साहित्य को 'वागड़ी' में वर्षों से प्रचारित-प्रसारित भी किया जा रहा है। वहीं हिन्दी साहित्य के संवर्द्धन और रचनाधर्मिता में यह अंचल देश-प्रदेश के हिन्दी क्षेत्रों से कहीं कमतर नहीं हैं। हमारे साहित्यकारों, रचनाकारों की गद्य व पद्य में रचित पुस्तकें हिन्दी को और आगे ले जाने की दिशा में अपनी अहम भूमिका निभा रही हैं। जनचेतना को जाग्रत करने में हमारे अंचल के साहित्यकारों की ओर से समय-समय पर पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है। साहित्यकारों की पुस्तकें वागड़ी में प्रकाशित हुई हैं तो हिन्दी में प्रकाशित पुस्तकों की भी वृहद श्रृंखला है जो अंचल के साहित्यिक विकास का दिग्दर्शन कराती हैं। हमारे यहां संत मावजी की आगलवाणियां हिन्दी में रूपान्तरित होकर मेघसागर, प्रेमसागर, सामसागर और रतनसागर ग्रंथ के रूप में सामने आई। वहीं खण्ड काव्य, निबंध, कहानी संग्रह, काव्य संग्रह भी साहित्यकारों के लिए रुचि का विषय रहे हैं।

इन रचनाकारों ने बढ़ाया मान-हिन्दी लेखन में हिम्मतलाल तरंगी, मणि बावरा, भूपेंद्र उपाध्याय तनिक, धनपतराय झा, डा. शंकरलाल त्रिवेदी, डा. नवीनचंद्र याग्निक, वीरबाला भावसार, अशोक पंड्या, भरतचंद्र शर्मा, घनश्यामसिंह भाटी, कृष्णा भावसार, डा. निर्मला शर्मा, डा. दीपकदत्त आचार्य, हरिहर झा, सुमित्रा मेहता, प्रकाश पंड्या प्रतीक, बिस्मिल नक्शबंदी, सईद रोशन, दिनेश पंचाल, नीता चौबीसा, दीपिका द्विवेदी दीप, आभा मेहता आदि ऐसे नाम हैं, जिन्होंने इस अंचल में हिन्दी रचनाधर्मिता को देश-विदेश तक पहुंचाकर मान बढ़ाया है। समय-समय पर विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं के माध्यम से प्रकाशित होने वाले काव्य संग्रहों और काव्य गोष्ठियों ने भी अंचल के साहित्यकारों के हिन्दी प्रेम को सार्वजनीन किया है।

सेंदवई गांव के कुएं में मिला मगरमच्छ

डूंगरपुर।जिले के डिमिया तालाब से निकलकर एक मगरमच्छ बैक वाटर क्षेत्र में सेंदवई गांव के कुएं में जा गिरा। कुएं में पानी लेने आये ग्रामीण मगरमच्छ को देखकर डर गए। ग्रामीणों ने मामले की जानकारी सरपंच ईश्वर कोटेड को दी। वही सरपंच ने इसकी सूचना वन विभाग को दी। कुएं में मगरमच्छ की सूचना पर वन विभाग से वनपाल अशोक भोई, वन रक्षक धनपाल कटारा स्नेक कैचर ललित श्रीमाल मोके पर पंहुचे। कुएं में करीब 3 फ़ीट तक पानी भरा हुआ था, जिसे निकालने के लिए वन विभाग ने वाटर पंप लगाया और करीब 2 घंटे की मशक्कत के बाद कुएं से पानी को खाली किया। इसके बाद ललित श्रीमाल के साथ वन विभाग की टीम कुएं में उतरी और मगरमच्छ को रेस्क्यू किया। वनपाल अशोक भोई ने बताया कि नर मगरमच्छ करीब 4 साल का था, जिसे रेस्क्यू करने के बाद वन विभाग की टीम डिमिया तालाब पर ले गए.

86 किलोग्राम मिल्क केक को नष्ट किया गया, सैंपल जांच के लिए भेजे

सागवाड़ा।

डूंगरपुर में अवैध गतिविधियों व नकलीखाद्य पदार्था के निर्माण व विक्रय के खिलाफ चलाये जा रहे अभियान के तहत सागवाड़ा में कार्यवाही की गई। थानाधिकारी सुरेन्द्र सोलंकी ने बताया कि मौके पर मिले कुल 86 किलोग्राम मिल्क केक को नष्ट किया गया। लिये गये सैम्पलो को जांच केलिए भेजे गये है जहा से रिपोर्ट प्राप्त होने पर अग्रीम कार्यवाही की जावेगी। मुखबीर सुचना मिली कि सागवाडा प्राईवेट बस स्टैंड के पास गामठवाडा में एक बिल्डिंग में एक व्यक्ति द्वारा सिंथेटीक मावे की मिठाईयां बनायी जा रही है। मुखबीर की सुचना पर मन थानाधिकारी मय टीम द्वारा सागवाडा प्राईवेट बस स्टेण्ड के पास गामठवाडा में बिल्डिंग के प्रथम तल पर जाकर चेक किया तो मौके पर काफी मात्रा में मावे की मिठाईया बनाई हुयी मिली व एक व्यक्ति मावे की मिठाई बनाता हुआ मिला। उक्त गोदाम की जांच की गई तो गया तो कुल 86 किलोग्राम मावा(मिल्क केक) व मिठाईया होना पाया गया। जिस पर मौके से खाद्य सुरक्षा प्रवर्तन निरीक्षक डूंगरपुर को सेम्पल लेने बाबत सूचना दी गई जिस पर अजय मोयल मौके पर आये व मौके पर मिले मावे मे से खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम 2006 के तहत मिल्क केक व खोए की बर्फी मावे की मिठाई के अलग अलग सेम्पल लिये गये।

निजी विद्यालय संघ की बैठक में मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी का माल्यार्पण कर किया स्वागत

दोवड़ा। निजी विद्यालय संघ ब्लॉक-दोवड़ा द्वारा आज नव पदस्थापित मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी प्राण जीवन शाह एवम अतिरिक्त ब्लॉक शिक्षा अधिकारी अजय जैन का माल्यार्पण कर स्वागत किया गया।। साथ ही संघ द्वारा कोरोना काल मे संस्था संचालन सम्बन्धी आ रही समस्याओ से विभाग को अवगत कराया। सीबीईओ शाह ने आश्वस्त किया कि किसी के साथ पक्षपात नही किया जाएगा।। इस अवसर पर संघ के नीलेश उपाध्याय, हेमंत जोशी, राजेंद्र सिंह राठौड़, रितेश उपाध्याय, कल्याण पाटीदार, गौतम पाटीदार, प्रवीण यादव, जयेश सेवक, राजेश पाटीदार, दिलीप भट्ट मौजूद थे।

दिल्ली से नहीं, अब गहलोत ही तय करेंगे मंत्रिमंडल विस्तार और फेरबदल का फॉर्मूला! अगस्त में है संभावना

जयपुर।

राजस्थान में मंत्रिमंडल विस्तार और फेरबदल के लिए प्रभारी अजय माकन की तमाम माथापच्ची और गुणा भाग के गणित के विफल होने के बाद अब बदलाव का फॉर्मूला 8 सिविल लाइन यानी मुख्यमंत्री आवास से निकलने जा रहा है।

माना जा रहा है कि अगस्त महीने के आखिरी सप्ताह में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत राजस्थान में मंत्रिमंडल विस्तार और फेरबदल कर सकते हैं। मुख्यमंत्री ने अपने विश्वस्त लोगों की टीम की मदद से मिले फीडबैक के आधार पर नए मंत्रिमंडल का आकार और चेहरा तैयार कर लिया है। मंत्रिमंडल से चार से पांच मंत्रियों की छुट्टी हो सकती है जबकि पायलट कैंप के 4 विधायकों एक निर्दलीय और एक बसपा से आए विधायक सहित 10 नए मंत्री बनाए जा सकते हैं. कहा जा रहा है कि 9 सितंबर से विधानसभा के सत्र में गहलोत मंत्रिमंडल की

नई टीम देखने को मिल सकती है ।कांग्रेस के सूत्र बता रहे हैं कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के स्तर पर मंत्रिमंडल विस्तार और फेरबदल को अंतिम रूप दिया जा रहा है हालांकि यह तय है कि बड़ा बदलाव नहीं होगा लेकिन पायलट कैंप के चार मंत्रियों सहित 10 नए मंत्री बनाए जा सकते हैं. चर्चा इस बात की भी है निर्दलीय विधायकों और बसपा से आए विधायकों में से अधिकांश को संसदीय सचिव की जिम्मेदारी मिल सकती है. अजय माकन जिस जोश से जयपुर से दिल्ली गए थे और जोश और उत्साह ठंडा पड़ गया है। उनके बयान बता रहे हैं कि उन्होंने जो फॉर्मूला तैयार किया था वह उसे लागू करने में नाकाम रहे हैं यानी फॉर्मूला वही लागू होगा जो अशोक गहलोत ने तैयार किया है।

फेल हो गए अजय माकन के दावे-दरअसल ये सबको पता है कि राजस्थान में जो भी बदलाव होगा, वह मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की मर्जी से होगा. यही वजह है कि प्रभारी अजय माकन जुलाई के आखिरी सप्ताह में जिस जोश से जयपुर आए थे। 3 दिन व्यापक मंथन किया और यह दावा किया जा रहा था कि जल्द ही मंत्रिमंडल विस्तार फेरबदल होगा वह दावे फेल हो गए हैं। अजय माकन ने जयपुर से जाते समय कहा था मैं ही दिल्ली हूं लेकिन राजस्थान के सियासी हालातों ने बता दिया है कि जो भी होना है, वह अशोक गहलोत की मर्जी से ही होगा।

वागड़ संदेश

Print Electronics & Digital Media Group

wagadsandesh.com

Live Tv I ePaper I Newsapp

डूंगरपुर । सागवाड़ा । चौरासी । आसपुर । बांसवाड़ा । गढी । घाटोल । बागीदौरा । कुशलगढ़

वागड़ संदेश : स्वत्वाधिकारी प्रकाशक मोनिका जैन द्वारा मोटिव प्रिंटिंग और ड़िजाइन, गामोठवाडा रोड़, सागवाड़ा, जिला डूंगरपुर (राज.) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक चंद्रेश व्यास
कार्यालय : गामोठवाडा रोड़, सागवाड़ा, जिला डूंगरपुर (राज.) फोन :.919460003552 Email : editorwagadsandesh@gmail.com Website : wagadsandesh.com